पश्चिम बंगाल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (WBBSE)

कक्षा 9 हिंदी
प्रथम भाषा

अध्याय 4

प्रश्न बैंक

अध्याय 4: जरुरतों के नाम पर

बिरला एजुकेशन - मुफ्त नोट्स

birlaeducation.org

अध्याय 4: जरुरतों के नाम पर

कवि: कुँवर नारायण

कहानी: पाठ को ऐसे याद रखो

कवि कुँवर नारायण सच बोलने वाला व्यक्ति है। उसकी प्रकृति है कि वह गलत को गलत कह डालता है, उस पर सही होने की पॉलिश नहीं चढ़ाता। इसका परिणाम यह होता है कि हर बहस के बाद उसे गलतफहमियों के बीच बिल्कुल अकेला छोड़ दिया जाता है। लोग उसे यह दिखाने को अकेला छोड़ देते हैं कि जो कुछ उसने कहा है, उसे वह करके भी दिखाए।

समाज में ऐसे लोग हैं जो खुद अपने से जीत नहीं पाते और सही बात का जीतना भी सह नहीं पाते। उनकी असहिष्णुता के बीच कवि को किसी अपमानजनक नाते की तरह बेमुरौवत तोड़ दिया जाता है। कवि की स्थिति समाज में ठीक वैसी है जैसी किसी घरेलू उपन्यास के अंत में जोड़ी गई शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची की होती है। उसे कोई नहीं पढ़ता, फिर भी वह पुस्तक का अंश होता है।

अंत में वे सब मिलकर कवि की बहस की हत्या कर डालते हैं, जरूरतों के नाम पर। और फिर वही लोग एक कवि से पूछते हैं कि जिंदगी क्या है, जिंदगी को बदनाम करके। इस प्रकार कवि ने समाज में रहने वाले मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी व्यक्ति के मन के बाहरी और भीतरी संघर्ष को और साहित्यकार की उपेक्षित स्थिति को इस कविता में उठाया है।

भावार्थ

पहला पद्यांश

birlaeducation.org

क्योंकि मैं गलत को साबित कर देता हूँ
इसलिए हर बहस के बाद
गलतफहमियों के बीच
बिल्कुल अकेला छोड़ दिया जाता हूँ
वह सब कर दिखाने को
जो सब कह दिखाया।

भावार्थ: कवि कहता है कि क्योंकि वह गलत को गलत साबित कर देता है, इसलिए हर बहस के बाद उसे गलतफहमियों के बीच बिल्कुल अकेला छोड़ दिया जाता है। यह उसकी प्रकृति है कि वह गलत को गलत कह डालता है, उस पर सही होने की पॉलिश नहीं चढ़ाता। उसकी इसी प्रकृति और सच्चाई का साथ देने के कारण उसे गलतफहमियों का शिकार बनाकर उन्हीं गलतफहमियों से अपने आप से लड़ने के लिए छोड़ दिया जाता है। लोग उसे इस संशय में डाल देते हैं कि जिसे वह गलत कह रहा है, वास्तव में वह गलत है भी या नहीं। लोग उसे अकेला छोड़ देते हैं कि उसने जो कुछ कहा है, उसे करके भी दिखाए।

दूसरा पद्यांश

वे जो अपने से जीत नहीं पाते
सही बात का भी जीतना सह नहीं पाते,
और उनकी असहिष्णुता के बीच
मैं किसी अपमानजनक नाते की तरह
बेमुरौवत तोड़ दिया जाता हूँ।

भावार्थ: कवि उन लोगों के बारे में कहता है जो जीवन में खुद तो कभी इस व्यवस्था से जीत नहीं पाए, लेकिन अगर कोई जीतता है तो उसकी जीत भी उनसे सहन नहीं होती। वे गलत को गलत और सही को सही कहने का साहस नहीं कर पाते। इसका

परिणाम यह होता है कि सही व्यक्ति की जीत में भी उन्हें अपनी हार दिखती है। उनकी असहिष्णुता के बीच कवि को उसी प्रकार अस्वीकार कर दिया जाता है जिस प्रकार किसी अपमानजनक रिश्ते को बिना किसी माया-मोह के तोड़ दिया जाता है।

तीसरा पद्यांश

प्रत्येक रोचक प्रसंग से हटा कर,
शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची की तरह
घरेलू उपन्यासों के अन्त में
लापरवाही से जोड़ दिया जाता हूँ।

भावार्थ: कवि कहता है कि उसे हर रोचक प्रसंग से हटाकर, शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची की तरह, घरेलू उपन्यासों के अंत में लापरवाही से जोड़ दिया जाता है। कवि अच्छी तरह जानता है कि समाज में उसकी स्थिति ठीक वैसी है जैसी किसी घरेलू उपन्यास के अंत में जोड़ी गई शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची की होती है। उसे कोई नहीं पढ़ता, फिर भी वह पुस्तक का अंश होता है। ठीक यही स्थिति कवि की है। वह समाज में रहते हुए भी समाज के कचरे के समान है, जिसकी कोई उपयोगिता नहीं मानी जाती।

चौथा पद्यांश

वे सब मिल कर
मेरी बहस की हत्या कर डालते हैं
जरूरतों के नाम पर।
और एक कवि से पूछते हैं कि जिंदगी क्या है
जिंदगी को बदनाम कर।

भावार्थ: कवि कहता है कि वे सब मिलकर उसकी बहस की हत्या कर डालते हैं, जरूरतों के नाम पर। वे अपनी जरूरतों के अनुसार गलत को सही और सही को गलत ठहराते हैं और कवि की सच्चाई को झुठला देते हैं। फिर वही लोग एक कवि से पूछते हैं कि जिंदगी क्या है, जिंदगी को बदनाम करके। इससे बड़े दुख की बात और क्या हो सकती है कि जो दूसरों की जिंदगी को तबाह कर डालते हैं, वही जिंदगी की परिभाषा पूछते हैं।

कवि परिचय

कुँवर नारायण का जन्म 19 सितंबर 1927 को फैजाबाद में हुआ था। वे नई कविता के प्रमुख कवियों में से एक हैं और अज्ञेय द्वारा संपादित तीसरे तारसप्तक (1959) से उनकी पहचान बनी। उनकी कविताओं में इतिहास और मिथक के माध्यम से वर्तमान की समस्याओं को उठाया गया है। उनके प्रमुख काव्य संग्रह 'चक्रव्यूह', 'परिवेश: हम-तुम', 'आमने-सामने' और 'कोई दूसरा नहीं' हैं, और खंडकाव्य 'आत्मजयी' तथा 'वाजश्रवा के बहाने' हैं। उन्हें सन् 2005 का ज्ञानपीठ पुरस्कार और पद्मभूषण सम्मान मिला। उनका देहांत 15 नवंबर 2017 को हुआ।

कठिन शब्द और उनके अर्थ

शब्द	अर्थ
गलतफहमी	भ्रम या मिथ्या धारणा
बहस	तर्क-वितर्क या विचार-विमर्श
असहिष्णुता	नहीं सह पाना, दूसरों की बात सहन न करना
बेमुरौवत	बिना किसी दया या मुरौवत के

नाता	रिश्ता, संबंध
रोचक प्रसंग	रुचिकर या अच्छा लगने वाला प्रसंग
शिक्षाप्रद	शिक्षा देने वाला
घरेलू उपन्यास	घर और समाज की पृष्ठभूमि पर लिखा उपन्यास
लापरवाही	बिना किसी परवाह के
हत्या	मार डालना, नष्ट कर देना
बदनाम	बुरा नाम करना, कलंक लगाना
जरूरत	आवश्यकता

1. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)

1. 'जरुरतों के नाम पर' कविता के रचनाकार कौन हैं?

(क) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

(ख) अरुण कमल

(ग) कुँवर नारायण

(घ) पाश

उत्तर: (ग) कुँवर नारायण

birlaeducation.org

---

2. कुँवर नारायण का जन्म कब हुआ था?

(क) 19 सितंबर 1927 को

(ख) 20 सितंबर 1928 को

(ग) 21 सितंबर 1929 को

(घ) 30 सितंबर 1926 को

उत्तर: (क) 19 सितंबर 1927 को

---

3. कुँवर नारायण किस सप्तक के प्रमुख कवि हैं?

(क) तार सप्तक

(ख) दूसरा सप्तक

(ग) तीसरा सप्तक

(घ) इनमें से किसी के नहीं

उत्तर: (ग) तीसरा सप्तक

---

4. कुँवर नारायण को किस वर्ष ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला?

(क) सन् 2001 में

(ख) सन् 2003 में

(ग) सन् 2005 में

(घ) सन् 2007 में

उत्तर: (ग) सन् 2005 में

---

5. कुँवर नारायण का प्रथम काव्य संग्रह कौन-सा है?

(क) तीसरा सप्तक

(ख) परिवेश: हम-तुम

(ग) आमने-सामने

(घ) चक्रव्यूह

उत्तर: (घ) चक्रव्यूह

---

6. 'आत्मजयी' किस विधा की रचना है?

(क) उपन्यास

(ख) कहानी

(ग) खंडकाव्य

(घ) निबंध

उत्तर: (ग) खंडकाव्य

birlaeducation.org

---

7. कवि ने अपनी तुलना किससे की है?

(क) घरेलू उपन्यास से

(ख) शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची से

(ग) कचरे से

(घ) दर्पण से

उत्तर: (ख) शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची से

---

8. कवि की बहस की हत्या कौन कर डालता है?

(क) प्रेमचंद

(ख) धर्मवीर भारती

(ग) लोग

(घ) सरकार

उत्तर: (ग) लोग

---

9. कविता के अंत में कवि से क्या पूछा जाता है?

(क) कविता क्या है

(ख) जिंदगी क्या है

(ग) सत्य क्या है

(घ) समाज क्या है

उत्तर: (ख) जिंदगी क्या है

---

10. 'वाजश्रवा के बहाने' के रचनाकार कौन हैं?

(क) कैफ़ी आजमी

(ख) चंद्रकांत देवताले

(ग) कुँवर नारायण

(घ) अरुण कमल

उत्तर: (ग) कुँवर नारायण

---

11. 'इन दिनों' किसकी रचना है?

(क) कुँवर नारायण की

(ख) हरिशंकर परसाई की

(ग) जयशंकर प्रसाद की

(घ) महादेवी वर्मा की

उत्तर: (क) कुँवर नारायण की

---

birlaeducation.org

12. कवि को किसके बीच अकेला छोड़ दिया जाता है?

(क) लोगों के बीच

(ख) गलतफहमियों के बीच

(ग) किताबों के बीच

(घ) सपनों के बीच

उत्तर: (ख) गलतफहमियों के बीच

---

2. रिक्त स्थान भरो

1. कवि _____ को गलत साबित कर देता है।

उत्तर: गलत

---

2. कवि को _____ के बीच अकेला छोड़ दिया जाता है।

उत्तर: गलतफहमियों

---

3. जो लोग अपने से जीत नहीं पाते, वे _____ का जीतना भी सह नहीं पाते।

उत्तर: सही बात

---

4. कवि को _____ नाते की तरह तोड़ दिया जाता है।

उत्तर: अपमानजनक

---

5. कवि की तुलना _____ की सूची से की गई है।

उत्तर: शिक्षाप्रद पुस्तकों

---

6. लोग कवि की _____ की हत्या कर डालते हैं।

उत्तर: बहस

---

7. कविता के अंत में कवि से पूछा जाता है कि _____ क्या है।

उत्तर: जिंदगी

---

8. कुँवर नारायण का जन्म _____ को हुआ था।

उत्तर: 19 सितंबर 1927

---

9. कुँवर नारायण को सन् _____ में ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।

उत्तर: 2005

---

birlaeducation.org

10. 'आत्मजयी' _____ की रचना है।

उत्तर: कुँवर नारायण

---

3. सही / गलत

1. 'जरुरतों के नाम पर' कविता के कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना हैं।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: 'जरुरतों के नाम पर' कविता के कवि कुँवर नारायण हैं।

---

2. कवि गलत को गलत कहने का साहस रखता है।

उत्तर: सही।

---

3. कवि को गलतफहमियों के बीच अकेला छोड़ दिया जाता है।

उत्तर: सही।

---

4. समाज में कवि की स्थिति शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची जैसी है।

उत्तर: सही।

---

5. लोग कवि की बहस की हत्या जरूरतों के नाम पर करते हैं।

उत्तर: सही।

---

6. कविता के अंत में लोग कवि से पूछते हैं कि कविता क्या है।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: कविता के अंत में लोग कवि से पूछते हैं कि जिंदगी क्या है।

---

7. कुँवर नारायण तीसरे सप्तक के कवि हैं।

उत्तर: सही।

---

8. 'चक्रव्यूह' कुँवर नारायण का प्रथम काव्य संग्रह है।

उत्तर: सही।

---

9. कुँवर नारायण को ज्ञानपीठ पुरस्कार सन् 2001 में मिला था।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: कुँवर नारायण को ज्ञानपीठ पुरस्कार सन् 2005 में मिला था।

---

10. 'आत्मजयी' एक उपन्यास है।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: 'आत्मजयी' एक खंडकाव्य है।

---

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (SAQ)

1. कवि को अकेला क्यों छोड़ दिया जाता है? पाठ्यपुस्तक

कवि गलत को गलत साबित कर देता है, इसलिए हर बहस के बाद उसे गलतफहमियों के बीच बिल्कुल अकेला छोड़ दिया जाता है। लोग उसे यह दिखाने को अकेला छोड़ देते हैं कि जो कुछ उसने कहा है, उसे वह करके भी दिखाए।

---

2. 'गलतफहमियों के बीच' का क्या अर्थ है? पाठ्यपुस्तक

लोग कवि को इस संशय में डाल देते हैं कि जिसे वह गलत कह रहा है, वास्तव में वह गलत है भी या नहीं। इसी भ्रम और मिथ्या धारणा को 'गलतफहमियों के बीच' कहा गया है।

---

3. वे लोग कौन हैं जो सही बात का जीतना सह नहीं पाते? पाठ्यपुस्तक

वे लोग जो अपने से जीत नहीं पाते, सही बात का भी जीतना सह नहीं पाते। वे खुद तो कभी इस व्यवस्था से जीत नहीं पाए, लेकिन अगर कोई जीतता है तो उसकी जीत भी उनसे सहन नहीं होती।

---

4. 'अपमानजनक नाते की तरह तोड़ दिया जाता हूँ' का भाव स्पष्ट करें। पाठ्यपुस्तक

कवि को उनकी असहिष्णुता के बीच उसी प्रकार अस्वीकार कर दिया जाता है जिस प्रकार किसी अपमानजनक रिश्ते को बिना किसी माया-मोह के तोड़ दिया जाता है।

---

5. कवि ने अपनी तुलना शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची से क्यों की है? पाठ्यपुस्तक

जैसे घरेलू उपन्यास के अंत में जोड़ी गई शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची को कोई नहीं पढ़ता, फिर भी वह पुस्तक का अंश होती है, वैसे ही समाज में कवि की भी कोई कद्र नहीं है, फिर भी वह समाज का हिस्सा है।

---

6. 'घरेलू उपन्यासों के अंत में लापरवाही से जोड़ दिया जाता हूँ' का भाव स्पष्ट करें। पाठ्यपुस्तक

कवि कहता है कि समाज उसे हर रोचक प्रसंग से हटाकर, शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची की तरह, घरेलू उपन्यासों के अंत में लापरवाही से जोड़ देता है। समाज में उसकी स्थिति ठीक वैसी ही है, जैसी किसी सूची की होती है जिसे कोई नहीं पढ़ता।

---

7. 'मेरी बहस की हत्या कर डालते हैं' का आशय स्पष्ट करें। पाठ्यपुस्तक

वे सब मिलकर कवि की बहस की हत्या कर डालते हैं, अर्थात् वे कवि के तर्कों को पूरी तरह दबा देते हैं और उसकी सच्चाई को झुठला देते हैं।

---

8. 'जरूरतों के नाम पर' का आशय क्या है? पाठ्यपुस्तक

'जरूरतों के नाम पर' का आशय यह है कि अपनी आवश्यकता के अनुसार गलत को सही और सही को गलत ठहराना। लोग अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए सच्चाई को दबा देते हैं।

---

9. कविता के अंत में कवि से कौन-सा प्रश्न पूछा जाता है? पाठ्यपुस्तक

कविता के अंत में कवि से यह प्रश्न पूछा जाता है कि जिंदगी क्या है। वही लोग यह पूछते हैं जो जिंदगी को बदनाम करके दूसरों की जिंदगी को तबाह कर डालते हैं।

birlaeducation.org

---

10. 'प्रत्येक रोचक प्रसंग से हटाकर' का क्या तात्पर्य है? पाठ्यपुस्तक

इसका तात्पर्य यह है कि जहाँ कवि को ख्याति मिलने वाली होती है, वहाँ से उसे दरकिनार कर दिया जाता है। उसे हर रोचक और महत्वपूर्ण प्रसंग से हटा दिया जाता है।

---

11. कवि अपने आपको भीड़ में अकेला क्यों पाता है? अतिरिक्त

कवि उन लोगों की भीड़ में शामिल नहीं हो पाता जो गलत को भी सही ठहराते हैं। क्योंकि उसमें सही को सही और गलत को गलत कहने का साहस है, इसलिए वह भीड़ में अकेला पड़ जाता है।

---

12. 'जरूरतों के नाम पर' कविता का मूल कथ्य क्या है? पाठ्यपुस्तक

कविता का मूल कथ्य यह है कि जो लोग सही को सही और गलत को गलत कहते हैं, अवसरवादी लोग उन्हें पसंद नहीं कर पाते। समाज में सच्चाई बोलने वाले व्यक्ति को अकेला कर दिया जाता है।

---

13. कुँवर नारायण का जन्म कब हुआ था? पाठ्यपुस्तक

कुँवर नारायण का जन्म 19 सितंबर सन् 1927 को फैजाबाद में हुआ था।

---

14. कुँवर नारायण के किन्हीं दो काव्य संग्रहों के नाम लिखिए। पाठ्यपुस्तक

कुँवर नारायण के दो काव्य संग्रह 'चक्रव्यूह' और 'परिवेश: हम-तुम' हैं। ('आमने-सामने' और 'कोई दूसरा नहीं' भी उनके प्रसिद्ध काव्य संग्रह हैं।)

---

15. 'आत्मजयी' और 'वाजश्रवा के बहाने' किस विधा की रचनाएँ हैं? अतिरिक्त

'आत्मजयी' और 'वाजश्रवा के बहाने' खंडकाव्य विधा की रचनाएँ हैं। 'आत्मजयी' सन् 1965 में और 'वाजश्रवा के बहाने' सन् 2008 में प्रकाशित हुआ।

---

16. कुँवर नारायण को कौन-से बड़े पुरस्कार मिले? अतिरिक्त

कुँवर नारायण को सन् 2005 का ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, व्यास सम्मान और पद्मभूषण सम्मान मिला।

---

17. नई कविता से क्या तात्पर्य है? अतिरिक्त

नई कविता मूलतः एक परिस्थिति के भीतर पलते हुए मानव और व्यक्ति की निजी स्थिति की कविता है। यह अपने युग के यथार्थ को व्यक्त करती है और उसमें विचारों, मूल्यों तथा मनुष्य के पूर्ण अस्तित्व से जुड़े सवाल उठाए जाते हैं।

---

18. कवि की प्रकृति कैसी है? अतिरिक्त

कवि की प्रकृति यह है कि वह गलत को गलत कह डालता है, उस पर सही होने की पॉलिश नहीं चढ़ाता। वह सच्चाई का साथ देता है, चाहे इसके लिए उसे अकेला ही क्यों न छोड़ दिया जाए।

---

birlaeducation.org

19. 'जिंदगी को बदनाम कर' का क्या अर्थ है? अतिरिक्त

इसका अर्थ यह है कि जो लोग दूसरों की जिंदगी को तबाह कर डालते हैं, वही जिंदगी की परिभाषा पूछते हैं। वे जिंदगी को बदनाम करके कवि से पूछते हैं कि आखिर जिंदगी किस चिड़िया का नाम है।

---

20. कविता में मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी की किस पीड़ा को व्यक्त किया गया है? अतिरिक्त

कविता में मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी व्यक्ति के मन के बाहरी और भीतरी संघर्ष को व्यक्त किया गया है। वह सही को सही कहने का साहस रखता है, लेकिन समाज उसे अकेला कर देता है, उसकी बहस की हत्या कर देता है और उसे कचरे के समान समझता है।

---

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (LAQ)

1. 'जरुरतों के नाम पर' कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखें। पाठ्यपुस्तक

इस कविता में कुँवर नारायण ने सच्चाई बोलने वाले व्यक्ति की पीड़ा को व्यक्त किया है। कवि गलत को गलत साबित कर देता है, इसलिए हर बहस के बाद उसे गलतफहमियों के बीच बिल्कुल अकेला छोड़ दिया जाता है। जो लोग खुद अपने से जीत नहीं पाते, वे सही बात का जीतना भी सह नहीं पाते और कवि को किसी अपमानजनक नाते की तरह तोड़ दिया जाता है। समाज में कवि की स्थिति ठीक वैसी है जैसी घरेलू उपन्यास के अंत में जोड़ी गई शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची की होती है। अंत में वे सब मिलकर कवि की बहस की हत्या कर डालते हैं, जरूरतों के नाम पर, और फिर वही लोग कवि से पूछते हैं कि जिंदगी क्या है।

---

2. 'जरुरतों के नाम पर' कविता का सारांश लिखें। पाठ्यपुस्तक

कवि सच बोलता है और गलत को गलत कहता है, इसलिए समाज उसे हर बहस के बाद गलतफहमियों के बीच अकेला छोड़ देता है। जो लोग खुद जीत नहीं पाते, वे सही बात की जीत भी सह नहीं पाते और कवि को अपमानजनक नाते की तरह तोड़ दिया जाता है। कवि को हर रोचक प्रसंग से हटाकर, शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची की तरह, घरेलू उपन्यासों के अंत में लापरवाही से जोड़ दिया जाता है। अंत में लोग मिलकर कवि की बहस की हत्या कर डालते हैं, जरूरतों के नाम पर, और फिर वही लोग कवि से पूछते हैं कि जिंदगी क्या है। इस प्रकार कवि ने मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के संघर्ष और साहित्यकार की उपेक्षित स्थिति को इस कविता में उठाया है।

---

3. 'जरुरतों के नाम पर' कविता के माध्यम से कुँवर नारायण ने क्या संदेश देना चाहा है, लिखें। पाठ्यपुस्तक

कुँवर नारायण ने इस कविता के माध्यम से समाज में रहने वाले मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी व्यक्ति के मन के बाहरी और भीतरी संघर्ष, जिंदा रहने की छटपटाहट में फँसे हुए जन तथा साहित्यकार और साहित्य से जुड़े अनेक सवालों को उठाया है। आज हमारे समाज का यह दुर्भाग्य है कि साहित्यकार को वह सम्मान, इज्जत और पहचान नहीं मिल पाती जिसके वे हकदार होते हैं। लोग अपनी जरूरतों के अनुसार गलत को सही और सही को गलत ठहराते हैं। कवि यह संदेश देना चाहता है कि सच्चाई बोलने वाले व्यक्ति को समाज से उपेक्षा मिलती है, फिर भी उसे सच्चाई का साथ नहीं छोड़ना चाहिए।

---

4. प्रथम पद्यांश की व्याख्या कीजिए: 'क्योंकि मैं गलत को साबित कर देता हूँ, इसलिए हर बहस के बाद, गलतफहमियों के बीच, बिल्कुल अकेला छोड़ दिया जाता हूँ।' पाठ्यपुस्तक

प्रस्तुत पंक्तियाँ कुँवर नारायण की कविता 'जरुरतों के नाम पर' से ली गई हैं। कवि कहता है कि क्योंकि वह गलत को गलत साबित कर देता है, इसलिए हर बहस के बाद उसे गलतफहमियों के बीच बिल्कुल अकेला छोड़ दिया जाता है। यह उसकी प्रकृति है कि वह गलत को गलत कह डालता है, उस पर सही होने की पॉलिश नहीं चढ़ाता। उसकी इसी प्रकृति और सच्चाई का साथ देने के कारण उसे गलतफहमियों का शिकार बनाकर उन्हीं गलतफहमियों से अपने आप से लड़ने के लिए छोड़ दिया जाता है। लोग उसे इस संशय में डाल देते हैं कि जिसे वह गलत कह रहा है, वास्तव में वह गलत है भी या नहीं।

---

5. द्वितीय पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए: 'वे जो अपने से जीत नहीं पाते, सही बात का भी जीतना सह नहीं पाते।' पाठ्यपुस्तक

इस पद्यांश में कवि उन लोगों के बारे में कहता है जो जीवन में खुद तो कभी इस व्यवस्था से जीत नहीं पाए, लेकिन अगर कोई जीतता है तो उसकी जीत भी उनसे सहन नहीं होती। वे गलत को गलत और सही को सही कहने का साहस नहीं कर पाते। इसका परिणाम यह होता है कि सही व्यक्ति की जीत में भी उन्हें अपनी हार दिखती है। उनकी असहिष्णुता के बीच कवि को उसी प्रकार अस्वीकार कर दिया जाता है जिस प्रकार किसी अपमानजनक रिश्ते को बिना किसी माया-मोह के तोड़ दिया जाता है। यहाँ कवि मध्यवर्ग के प्रतिनिधि के रूप में हमारे सामने आता है, जिसकी सबसे बड़ी इच्छा व्यक्ति की निजी स्वतंत्रता है।

---

6. तृतीय पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए: 'प्रत्येक रोचक प्रसंग से हटा कर, शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची की तरह, घरेलू उपन्यासों के अन्त में, लापरवाही से जोड़ दिया जाता हूँ।' पाठ्यपुस्तक

इस पद्यांश में कवि कहता है कि उसे हर रोचक प्रसंग से हटाकर, शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची की तरह, घरेलू उपन्यासों के अंत में लापरवाही से जोड़ दिया जाता है। कवि इस सच्चाई को अच्छी तरह समझता है कि लोग कितनी चालाकी से उसकी उपेक्षा करके उसे दरकिनार कर देते हैं। समाज में उसकी स्थिति ठीक वैसी है जैसी किसी घरेलू उपन्यास के अंत में जोड़ी गई शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची की होती है। उसे कोई नहीं पढ़ता, फिर भी वह पुस्तक का अंश होता है। ठीक यही स्थिति कवि की है। वह समाज में रहते हुए भी समाज के कचरे के समान है, जिसकी कोई उपयोगिता नहीं मानी जाती।

---

7. चतुर्थ पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए: 'वे सब मिल कर, मेरी बहस की हत्या कर डालते हैं, जरूरतों के नाम पर।' पाठ्यपुस्तक

इस पद्यांश में कवि कहता है कि वे सब मिलकर उसकी बहस की हत्या कर डालते हैं, जरूरतों के नाम पर। वे अपनी जरूरतों के अनुसार गलत को सही और सही को गलत ठहराते हैं। कवि की सच्चाई को झुठलाकर वे कहते हैं कि यही समय की माँग है। जरूरतों के नाम पर वे कवि की जिंदगी से खिलवाड़ करते हैं, उसकी भावनाओं का मजाक उड़ाते हैं और फिर उन्हीं से पूछते हैं कि जिंदगी क्या है। इससे बड़े दुख की बात और क्या हो सकती है कि जो दूसरों की जिंदगी को तबाह कर डालते हैं, वही जिंदगी की परिभाषा पूछते हैं।

---

8. कुँवर नारायण की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए। पाठ्यपुस्तक

कुँवर नारायण को पढ़ने पर हमें यह अनुभव होता है कि वे विचारों और मूल्यों के कवि हैं। चाहे वह प्रेम हो, विषाद हो या मृत्यु से जुड़े सवाल, उनका अपना अनुभव कविता में नया विचार बनता है। उनका आत्मबोध केवल अपने आप तक सीमित नहीं है, वह व्यक्ति और व्यापक सत्य के बीच एक नया संबंध बनाता है। उनकी कविताओं में इतिहास और मिथक के माध्यम से वर्तमान की समस्याएँ उठाई गई हैं। उनकी कविता कवि के निजी अनुभवों का बखान करती है और उसमें वर्तमान माहौल के प्रति गहरा आक्रोश दिखाई देता है। 'भीड़ में अकेला पड़ता व्यक्ति' नई कविता की प्रमुख विशेषता रही है, जो उनकी कविता में साफ झलकती है।

---

9. कुँवर नारायण की कविताओं की भाषा और शिल्प पर विचार कीजिए। पाठ्यपुस्तक

कुँवर नारायण की भाषा आम आदमी की भाषा है। लंबे समय से यह माना जाता रहा है कि साहित्य की भाषा अलग होती है, लेकिन कुँवर नारायण की भाषा ने यह भेद मिटा दिया है। उनकी काव्य-भाषा में चिंतन की प्रवृत्ति दिखाई देती है। काव्य-शिल्प के बारे में कुँवर नारायण का मानना है कि नई कविता की शैली की प्रमुखता यह है कि वह सीधे-सीधे चेतना को छूना चाहती है। वे काव्य-शिल्प के सिद्ध कवि हैं। वे कम से कम शब्दों का प्रयोग करके बड़ी बात कह जाते हैं। इससे उनकी कवित्व की शक्ति और सीमा का एक साथ पता चल जाता है।

birlaeducation.org

---

10. नई कविता के प्रमुख कवि के रूप में कुँवर नारायण का मूल्यांकन कीजिए। पाठ्यपुस्तक

कुँवर नारायण नई कविता के प्रमुख कवियों में से एक हैं। अज्ञेय द्वारा संपादित तीसरे तारसप्तक (1959) से उनकी पहचान नई कविता के कवि के रूप में बनी। उनकी कविताओं में मनुष्य के पूर्ण अस्तित्व से जुड़े सवाल उठाए गए हैं। आजादी के बाद भारत के पारिवारिक ढाँचे, सामाजिक संबंधों और जीवन मूल्यों में जो परिवर्तन हुए, वे उनकी कविताओं में दिखाई देते हैं। उनकी कविताओं में जीवन के प्रति ऊब, खीझ, निराशा और कुंठा की अभिव्यक्ति मिलती है। उन्होंने काव्य-भाषा और काव्य-शिल्प की दृष्टि से हिंदी कविता को नई समृद्धि दी और इससे नई कविता की पहचान बनी।

---

11. कुँवर नारायण का जीवन परिचय लिखिए। अतिरिक्त

कुँवर नारायण का जन्म 19 सितंबर सन् 1927 को फैजाबाद में हुआ था। अज्ञेय द्वारा संपादित तीसरे तारसप्तक (1959) से उनकी पहचान नई कविता के प्रमुख कवि के रूप में बनी। वे मूलतः कवि हैं, लेकिन कविता के अलावा उन्होंने कहानियाँ, लेख और समीक्षाएँ भी लिखीं। उन्होंने सिनेमा, रंगमंच और साहित्य की अन्य कलाओं पर भी लेखनी चलाई। उनकी अनेक रचनाओं का अनुवाद कई विदेशी भाषाओं में हो चुका है। सन् 2009 में उन्हें उनकी साहित्य-सेवा के लिए वर्ष 2005 के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया और उन्हें पद्मभूषण सम्मान भी मिला। उनका देहांत 15 नवंबर 2017 को हुआ।

---

12. 'गलत को गलत कहने' का साहस कवि को किस स्थिति में ले जाता है? अतिरिक्त

गलत को गलत कहने का साहस कवि को अकेलेपन की स्थिति में ले जाता है। हर बहस के बाद उसे गलतफहमियों के बीच बिल्कुल अकेला छोड़ दिया जाता है। लोग उसे इस संशय में डाल देते हैं कि जिसे वह गलत कह रहा है, वास्तव में वह गलत है भी या नहीं। उसकी बहस की हत्या कर दी जाती है और उसे समाज से उसी तरह तोड़ दिया जाता है जिस प्रकार किसी अपमानजनक रिश्ते को बिना किसी मुरौवत के तोड़ दिया जाता है। फिर भी कवि सच्चाई का साथ नहीं छोड़ता।

---

13. कविता के शीर्षक 'जरुरतों के नाम पर' की सार्थकता स्पष्ट कीजिए। अतिरिक्त

कविता का शीर्षक 'जरुरतों के नाम पर' पूरी तरह सार्थक है, क्योंकि पूरी कविता में यही बताया गया है कि लोग अपनी जरूरतों के नाम पर गलत को सही और सही को गलत ठहराते हैं। कवि की बहस की हत्या भी जरूरतों के नाम पर ही की जाती है। लोग अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए सच्चाई को दबा देते हैं और सच्चे व्यक्ति को अकेला कर देते हैं। शीर्षक कविता के केंद्रीय भाव को व्यक्त करता है, इसलिए यह पूरी तरह उपयुक्त है।

---

14. समाज में साहित्यकार की स्थिति पर कवि के विचार लिखिए। अतिरिक्त

कवि के अनुसार आज समाज में साहित्यकार को वह सम्मान, इज्जत और पहचान नहीं मिल पाती जिसके वे हकदार होते हैं। साहित्यकार की स्थिति ठीक वैसी है जैसी किसी घरेलू उपन्यास के अंत में जोड़ी गई शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची की होती है। उसे कोई नहीं पढ़ता, फिर भी वह पुस्तक का अंश होता है। कवि समाज में रहते हुए भी समाज के कचरे के समान है, जिसकी कोई उपयोगिता नहीं मानी जाती। लोग उसकी उपेक्षा करके उसे दरकिनार कर देते हैं।

---

birlaeducation.org

15. 'शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची' के प्रतीक से कवि क्या कहना चाहता है? अतिरिक्त

शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची का प्रतीक कवि की उपेक्षित स्थिति को दिखाता है। जैसे घरेलू उपन्यास के अंत में जोड़ी गई शिक्षाप्रद पुस्तकों की सूची को कोई नहीं पढ़ता, फिर भी वह पुस्तक का अंश होती है, वैसे ही समाज में कवि की भी कोई कद्र नहीं है, फिर भी वह समाज का हिस्सा है। इस प्रतीक से कवि यह कहना चाहता है कि समाज साहित्यकार को केवल औपचारिक रूप से स्वीकार करता है, उसकी बातों को कोई महत्व नहीं देता।

---

16. कविता में 'बहस की हत्या' से क्या तात्पर्य है? अतिरिक्त

'बहस की हत्या' से तात्पर्य यह है कि लोग मिलकर कवि के तर्कों को पूरी तरह दबा देते हैं। वे कवि की सच्चाई को झुठला देते हैं और कहते हैं कि यही समय की माँग है। कवि की बहस की हत्या का अर्थ है कि समाज में सच्ची बहस और सच्चे तर्क के लिए कोई जगह नहीं बची है। लोग अपनी जरूरतों के अनुसार गलत को सही ठहराकर सच्चाई की आवाज को ही मार डालते हैं।

---

17. कवि के अनुसार सच्चाई का साथ देने का क्या परिणाम होता है? अतिरिक्त

कवि के अनुसार सच्चाई का साथ देने का परिणाम यह होता है कि व्यक्ति को अकेला छोड़ दिया जाता है। उसे गलतफहमियों का शिकार बनाकर उन्हीं गलतफहमियों से अपने आप से लड़ने के लिए छोड़ दिया जाता है। उसकी बहस की हत्या कर दी जाती है और उसे समाज से तोड़ दिया जाता है। फिर भी कवि सच्चाई का साथ नहीं छोड़ता, क्योंकि सच्चाई बोलना ही उसकी प्रकृति है।

---

18. कविता में व्यक्त मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के बाहरी और भीतरी संघर्ष का वर्णन कीजिए। अतिरिक्त

कविता में मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी व्यक्ति के बाहरी और भीतरी संघर्ष को व्यक्त किया गया है। बाहरी संघर्ष यह है कि समाज उसे अकेला कर देता है, उसकी बहस की हत्या कर देता है और उसे हर रोचक प्रसंग से हटा देता है। भीतरी संघर्ष यह है कि वह गलत को गलत कहने का साहस रखता है, लेकिन समाज उसे इस संशय में डाल देता है कि जिसे वह गलत कह रहा है, वास्तव में वह गलत है भी या नहीं। वह जिंदा रहने की छटपटाहट में फँसा हुआ है, फिर भी अपनी सच्चाई पर अडिग रहता है।

---

19. 'जिंदगी क्या है' प्रश्न की विडंबना स्पष्ट कीजिए। अतिरिक्त

कविता के अंत में जो लोग कवि से पूछते हैं कि जिंदगी क्या है, वही लोग दूसरों की जिंदगी को तबाह कर डालते हैं। इससे बड़े दुख की बात और क्या हो सकती है कि जो जिंदगी की परिभाषा नहीं जानते, वे ही जिंदगी के बारे में पूछते हैं। यह प्रश्न एक विडंबना है, क्योंकि जिंदगी को बदनाम करने वाले लोग ही जिंदगी क्या है, यह जानना चाहते हैं। कवि इस प्रश्न के माध्यम से समाज की विडंबना को उजागर करता है।

---

20. कविता की भाषा शैली की विशेषताएँ लिखिए। अतिरिक्त

कविता की भाषा आम आदमी की भाषा है, जिसमें चिंतन की प्रवृत्ति दिखाई देती है। कवि कम से कम शब्दों का प्रयोग करके बड़ी बात कह जाता है। नई कविता की शैली की प्रमुखता यह है कि वह सीधे-सीधे चेतना को छूना चाहती है। कविता में 'गलतफहमी', 'असहिष्णुता', 'बेमुरौवत' जैसे शब्दों का सटीक प्रयोग हुआ है। भाषा सरल होते हुए भी अर्थगर्भित है और उसमें कवि के निजी अनुभवों की अभिव्यक्ति मिलती है।

---

birlaeducation.org